हिमाचल की हस्तकला में आध्यात्मिक शिवशक्ति का चित्रित सौन्दर्य

ISHRO DEVI
Research Scholar, Department of Visual Arts, Himachal Pradesh University, Shimla

सार संक्षेपिका

प्रस्तुत शोध पत्र में हिमाचल की हस्तकला में आध्यात्मिक शिवशक्ति के चित्रित सौन्दर्य का वर्णन किया गया है। हिमाचल प्रदेश के सांस्कृतिक त्यौहारों, रिवाजों में, जो कला, श्रृंगार व अन्य दैव्य पूज्य सामग्री हेतु जो हस्तशिल्प तैयार किये जाते है उनमें यहाँ की आध्यात्मिकता का व लोगों की आस्था, सम्पूर्ण निष्ठा तथा विलिनता का समावेश स्पष्ट दृश्यरूप में सृजित दिखाई देता है हिमालय की वेशभूषा, पहनावे, गहने, मूर्तियां, चित्रकला काष्ठकला के लघु रूपों में जो यहीं के लोककारीगरों द्वारा वंशानुगत बनाये जाते है। शिव पार्वती के एक रूप अर्धनारीश्वर, शिव साधना, अराधना एवं उपासना तथा शिव के अनेक रूपों को हिमाचल की सुप्रसिद्ध पहाड़ी शैलियों में भी अभिव्यक्त किया गया है। जिसमें चम्बा, काँगड़ा, गुलेर, नूरपूर, मण्डी, कूल्लू, बिलासपुर, गढ़वाल, जम्मू बसोहली शैलियों के अन्तर्गत शिवशक्ति का एकरूप चित्रित किया गया है।

बीज शब्द

हस्तकला, आध्यात्मिक शिवशक्ति,सौन्दर्य

भूमिका

भारतीय कलाओं में अधिकतर आध्यात्मिकता का वास है। भारतीय कला में प्रगाढ़ सौन्दर्य बोध चेतना शक्ति आध्यात्मिक अन्तर्दृष्टि लिए सृजनात्मकता पूर्ण श्रृंगारिक रूप में अभिव्यक्त होती है। आध्यात्मिकता हस्तकलाओं में रची–बसी है तथा यह कलाएं प्रादेशिक सांस्कृतिक रूप में उद्धत है। भारतीय धार्मिक कला परम्पराओं में परम्परागत रूप से कहीं न कहीं आध्यात्मिकता की गहन छाप समाहित रही हैं।

ऐश्यिन कला के सभी रूपों में लगातार आध्यात्मयी सामाजिक प्रवृत्ति का न थमने वाला प्रवाह निरंतर अग्रसरता लिए बना रहता है। ऐश्यिन कलाकार इसे परम ध्वनि (Prophetic) के नाम से बुलाते हैं। यह हमें अदृश्य रूप में परमसत्ता प्रभु की मौजूदगी का दृश्य आभास कराती है। उदाहरणार्थ अंजता व ऐलोरा की गुफाओं में बने भित्ति चित्र (म्यूरल) जिनके सामने नतमस्तक होकर भिक्षुओं ने ध्यान के उच्च स्थिति में रहकर आध्यात्मिकता की स्थिति को सर्वोपरि रूप में पहुंचाया व शांति एवम् ज्ञान की विशुद्धता की प्राप्ति पाई।

हिन्दु धर्म के शैव, वैष्णव, शक्ति सम्बन्धी सभी पूजनीय कला रूप चाहे यह चित्र, मूर्ति, संगीत, नाट्य या वाद्य में हो इन सभी में परम सत्ता के श्रद्धेय भाव ध्वनिवत् बने रहते हैं। साधारण व्यक्ति विशेष इनके द्वारा लोक की सांसारिक सत्ता से कहीं ऊपर उठकर आलौकिक सत्ता में अपने आपको परमतत्व में लीन पाता है। विविध कला वस्तुओं के सृजन में चित्त रहकर कलाकार मानवता को परमतत्व की आध्यात्मिकता के दर्शन करवाने में सक्षम हो जाता है और यह संम्भवता तभी बनती है, जब कलाकार की कल्पना, चेतना, मन, सृजनता, श्रद्धा के पूजनीय भाव कला

कृतित्व के साथ एकाग्रचित्त होकर कला के विविध रूपों में समा जाते हैं। इस प्रकार सत्यम्, शिवम्, सुदंरम् का सौंदर्यमयी विशुद्ध सृजन कर कलाकार मनुष्य एवं परमसत्ता प्रभु के बीच योग पुल को आपस में एक होने व जोड़नें के प्रयास के योगदान में सफल होता है। यही चित्त यौगिक पुल मोक्ष पाने के लक्ष्य अर्थात आध्यात्मिक ब्रह्माण्डीय सत्ता तत्व की प्राप्ति में सार्थक होता है। श्रद्धा, रूप, भेद, रस, आंनद, भाव भंगिमाओं, मुद्राओं की लावण्यता, वर्ण द्वारा सभी प्रतीकात्मक अदृष्य कला तत्वों को कलाकार अपने कला के विविध सृजनात्मक कला आयामों में प्रयोग करके आध्यात्मिक योग ध्वनि में समाहित करता है। कलाकार के कृतित्व में सृजनात्मकता व चित्रात्मकता के सभी कला रूपों में आध्यात्मिक अंर्तः दर्शन होते हैं। कला के रंग, रूप, ध्वनि, प्रतीक, आकार विशुद्ध होकर अचेतन–चेतन देह में शक्ति पुंज के आंतरिक दिव्य दृष्टि का आभास कराते हैं।

भारतीय आध्यात्मिकता के क्षेत्रों में उत्तरी भारत का देवभूमि के नाम से विश्वप्रसिद्ध राज्य हिमाचल प्रदेश पश्चिमी हिमालय में बसा हुआ है यहां की कला, संस्कृति, भाषा में देवी–देवताओं का मधुर संगीत झलकता है वही यहां का प्राकृतिक सौन्दर्य जो पर्वतीय हिमालय श्रृखंलाओं, नदियों, घाटियों में बसा हुआ है जिसका आध्यात्मिक संगीत सदियों से मानव जाति को लुभाता रहा है यह आकर्षण की शक्ति यहां का आध्यात्मिक सौन्दर्य ही है तभी इस धरती को देवों के देव महादेव शिवशंकर की भूमि के नाम से भी जाना जाता है कालिदास द्वारा रचित काव्य कुमारसम्भवम् में उन्होंने हिमालय के सौन्दर्य का वर्णन करते हुए शिव व पार्वती के पारिवारिक जीवन काल की गहराईयों को काव्य रूप प्रदान कर जीवन्त बना दिया है।

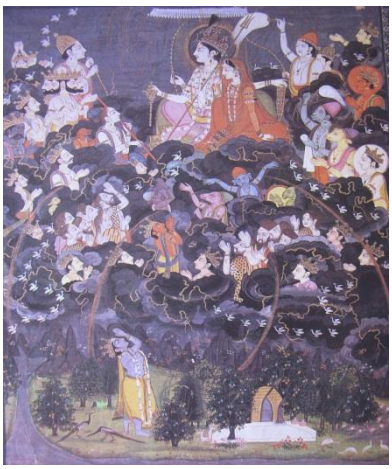

(चित्र सं.1) शिव–पार्वती अराधना

कला के क्षेत्र में हिमालय का विषय सौन्दर्य के प्राक्ट्य व आकर्षण हेतु रहा है वहीं शिवशक्ति के निवास के रूप में कई रूपों से कलाकारों द्वारा आध्यात्मिक अभिव्यक्ति का केन्द्र भी रहा है। हिमाचल प्रदेश के सांस्कृतिक त्यौहारों, रिवाजों में, जो कला, श्रृंगार व अन्य दैव्य पूज्य सामग्री हेतु जो हस्तशिल्प तैयार किये जाते है उनमें यहाँ की आध्यात्मिकता का व लोगों की आस्था, सम्पूर्ण निष्ठा तथा विलिनता का समावेश स्पष्ट दृश्यरूप में सृजित दिखाई देता है हिमालय की वेशभूषा, पहनावे, गहने, मूर्तियां, चित्रकला काष्ठकला के लघु रूपों में जो यहीं के लोककारीगरों द्वारा वंशानुगत बनाये जाते है यहीं की हिमालय विशेषता लिये अभिव्यक्त व आध्यात्मिक प्रतीकात्मक बनाये जाते है शिवशक्ति या शिव पार्वती के एक रूप अर्धनारीश्वर, शिव साधना, अराधना एवं उपासना तथा शिव के अनेक रूपों को हिमाचल की सुप्रसिद्ध पहाड़ी शैलियों में भी अभिव्यक्त किया गया है।

जिसमें चम्बा, काँगड़ा, गुलेर, नूरपूर, मण्डी, कूल्लू, बिलासपुर, गढ़वाल, जम्मू बसोहली शैलियों के अन्तर्गत शिवशक्ति का एकरूप चित्रित किया गया है।

यहाँ की जनजातिय गद्दी लोग जोकि शिव के महान उपासक है उनकी धार्मिक श्रद्धा शिव रूप में सर्वत्र है जिला चम्बा के पहाड़ों में अपनी भेड़–बकरियों के साथ विचरण करने वाली यह जाति अपने गले में शिव पार्वती परिवार का चित्रित (लाकेट) स्वी–हार धारण करते हैं। जो उनके शिव के प्रति भक्ति प्रेम व उनकी आध्यात्मिक निष्ठाका प्रतीक है। वही शिव शक्ति का आध्यात्मिक सृजन मन्दिरों की भित्तीयों, मोहरो, धातु काष्ट, लकड़ी व पत्थर उत्कीर्ण तथा चित्र के रूप में कारीगरों ने किया है।

(चित्र सं. 2) शिव–पार्वती स्वी आभूषण

परन्तु अत्यधिक दृश्यात्मक रूप में संयोजित चित्रों के माध्यम से ही प्राप्त होता है जिसके प्रति स्थानीय व समस्त आध्यात्मिक मानवता को शिवशक्ति बोध दृश्य रूप में प्राप्त होता है तथा आध्यात्मिक संरक्षण चित्रित हस्तकला के माध्यम से इन पहाड़ी लघु हस्तकलाओं के रूप में किया जाता है।

सन्दर्भ सूची

एच. गोयेटज (1962), आर्टिकल टू इलस्ट्रेटड परषियन मेंनुस्क्रीप्टस फ्रोमं कश्मीर, आर्ट एशियाटीक्यूस

केथरीन गलेनन (1983), अर्ली पेटिगं इन मण्डी, आर्टीवस एशियाई

गोस्वामी बी. एन. (1986) इनसेन्स ऑफ इण्डियन आर्ट, सेन फ्रांसिसको

पखरोलवी प्रेम (1987), हिमाचल का जनजीवन एवं आस्थायें, यशपाल साहित्य परिषद नदौन हमीरपुर

हाण्डा ओ. सी.(1992) शिवा इन आर्ट–ए स्टडी ऑफ शिवा आइकनोग्रॅफी एण्ड मीनियेचरस, ईण्डस कम्पनी, नई दिल्ली

कालीदास (2016), ंउचयकुमारसम्भवम्, चौखम्बा विद्या भवन